International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 203-206

मानवीय जीवन के विकास में पर्यावरण का महत्व

डॉ. चन्दन मल शर्मा*
डॉ. संजय कुमार मंडावत**

सार

पृथ्वी के धरातल पर मानव की जन्म प्रकृति के अद्भुत देन है। मानव में बुद्धि का प्रकल्प, विकल्प, व्यक्तित्व और कृतित्व उसे अन्य जीवन–जगत से विशिष्ट एवं पृथक बना देता है। अधोलिखित विशेषताओं के कारण ही मानव अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चिंतनशील होकर पर्यावरण से अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करने लगा। मानव ने निश्चित पर्यावरण में रहकर बुद्धि, बल और कार्यों द्वारा एक विशिष्ट संस्कृति का निर्माण किया, साथ ही प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए सामाजिक मूल्यों और आदर्शों को भी स्थापित किया। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भोजन, वस्त्र, आश्रय से लेकर व्यवसाय, कार्यक्षमता, स्वास्थ्य, ज्ञान–विज्ञान, भाषा, संस्कृति, धर्म आदि के निर्धारण में पर्यावरणीय तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मानव अन्य जीवों की तरह अपने–आप को प्राकृतिक पर्यावरण के अनुरूप बनाने के लिए अनुकूल रूपांतरण एवं समायोजन करता रहता है। किसी भी प्रदेश में पर्यावरण एवं मानव के मध्य सम्बन्धों को वहां के जनसंख्या वितरण के द्वारा समझने में अनुकूलता रहती है। मनुष्य किसी भी भौगोलिक प्रदेश में पर्यावरणीय तत्वों का जितना अधिक अनुकूलतम प्रयोग करने में समर्थ है, वहां के आर्थिक संसाधन उतनी ही अधिक सशक्त और जनसंख्या बसाव भी उतना ही अधिक होगा, जैसे यूरोप देश, एशियाई देश आदि। इसके विपरीत प्रौद्योगिकी के पिछड़ेपन और अज्ञानता के कारण किसी भौगोलिक इकाई में मानव स्थानीय संसाधनों का विदोहन एवं आर्थिक उपयोग नहीं कर पाया वे क्षेत्र आर्थिक रूप से सशक्त नहीं हो पाए और वहां जनसंख्या बसाव भी कम देखने को मिलेगा जैसे दक्षिण अमेरिका का अमेजन बेसिन, विषुवत रेखीय वर्षा वनों के क्षेत्र, मध्य अफ्रीका का कांगो बेसिन आदि।

शब्दकोश: *बुद्धि का प्रकल्प, संस्कृति, अनुकूलन, रूपांतरण, समायोजन, जनसंख्या वितरण, प्रौद्योगिकी।*

प्रस्तावना

मानव जीवन पर पर्यावरण का प्रभाव

सम्पूर्ण जीव–जगत में प्रत्येक जीवों की उत्पत्ति का कारण प्रकृति ही है। चाहे वह छोटे से छोटे एक कोशिकिय जीव हो या बुद्धिशाली मानव। मनुष्य का संपूर्ण जीवन जब वह गर्भ में पल रहा होता है तब से लेकर मृत्यु पर्यंत प्रकृति पर ही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर रहता है। प्राकृतिक पर्यावरण में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के तत्व विद्यमान है, साथ ही मनुष्य के अंदर भी सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के विचार पाए जाते हैं। मानव और प्रकृति दोनों एक–दूसरे पर अलग–अलग और सामूहिक रूप से अपना–अपना प्रभाव डालते हैं। उसके परिणाम स्वरूप ही उस क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का निर्माण होता है। प्रकृति एवं पर्यावरण दोनों सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के अलग–अलग प्रभाव डालते हैं। इस शोध में प्राकृतिक पर्यावरण में संपूर्ण नैसर्गिक

* विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, टोडाभीम, करौली, राजस्थान।
** विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, महवा, दौसा, राजस्थान।

कारकों के द्वारा मानव जीवन को प्रभावित करने वाले सामान्य प्रभावों की विवेचना करने का प्रयास किया गया है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख तत्वों में जल, वायु, मृदा, जलापूर्ति, प्राकृतिक वनस्पति आदि को सम्मिलित करते हुए अध्ययन किया गया है।

जलवायु का प्रभाव

पुरातन काल से जिन क्षेत्रों की जलवायु अनुकूल थी, मानव सभ्यताओं का विकास भी उन्हीं क्षेत्रों में संभव हो सका, जैसे–भारत के पश्चिमोत्तर भाग में सिंधु घाटी सभ्यता, चीन में मेसोपोटामिया और वांग्हो की सभ्यता, मिस्र की सभ्यता आदि और वर्तमान युग में भी विश्व के सर्वाधिक विकसित देश, अनुकूल जलवायु के शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र, जहां जलवायु स्वास्थ्यवर्धक एवं सर्वोत्तम कार्य क्षमता वाली है वहीं उद्भव हुए हैं, जैसे यूरोपीय देश (फ्रांस, जर्मनी, यूक्रेन, रूस, नीदरलैंड आदि) कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि।

जलवायु के प्रमुख तत्वों में सूर्य प्रकाश, तापमान, वर्षा, आर्द्रता, प्रचलित हवाएं आदि को सम्मिलित किया जाता है। ये सभी तत्व पृथक–पृथक और सामूहिक रूप से मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। जलवायु का प्रभाव मानव विकास, रहन–सहन, खानपान, शारीरिक बनावट, रूप–रंग, वस्त्र, स्वास्थ्य, कार्यक्षमता, व्यवसाय, क्रियाशीलता और अन्य गतिविधियों पर अवश्य दृष्टिगोचर होता है। जैसे उष्ण प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों का रंग, उच्च तापमान के कारण काला होगा, जबकि शीत और शीतोष्णकटिबन्ध में गोरे रंग के व्यक्ति मिलेंगे। जिन प्रदेशों की जलवायु अनुकूल पाई जाती है, उन प्रदेशों में जनसंख्या घनत्व, अन्य प्रतिकूल जलवायु के क्षेत्रों से निश्चित रूप से अधिक ही होगा।

अत्यधिक आर्द्रता एवं अत्यधिक उष्णता दोनों ही मानव बसाव एवं कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं, जैसे अति उष्णार्द्र जलवायु वाले भूमध्य रेखीय वर्षावन और शुष्क मरुस्थल दोनों ही निर्जन क्षेत्र हैं। तापमान एवं वृष्टि के बदलाव के अनुसार ही गृह निर्माण सामग्री, दीवारों की मोटाई, छतों की ढाल आदि में अंतर देखने को मिलता है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिक ढाल, जबकि कम वर्षा वाले क्षेत्रों में मकान की कम ढाल मिलती है। जलवायु के द्वारा विभिन्न प्रकार के उद्योग भी प्रभावित होते हैं। जैसे–ऊनी वस्त्र उद्योग अधिकांशतः शीतोष्ण प्रदेशों में ही विकसित होते हैं, जबकि सूती वस्त्र उद्योग का विकास उष्ण एवं शीतोष्ण दोनों प्रकार के प्रदेशों में देखने को मिलता है। इसी प्रकार राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं यातायात भी जलवायु से प्रभावित होते हैं। शीत प्रदेशों में ठण्ड के कारण सड़कें व दर्रे बर्फ से ढक जाते हैं, जिससे यातायात अवरुद्ध हो जाता है। जबकि उपोष्ण एवं शीतोष्ण मैदानों में सड़क, रेल एवं हवाई यातायात सुविधाजनक रहता है।

मृदा का प्रभाव

मृदा और मानव गतिविधियों में गहरा संबंध पाया जाता है। मृदा की संरचना, बनावट एवं विकास मूल शैल, जलवायु, वनस्पति, भूमि का ढाल, समय अवधि आदि के द्वारा निर्धारित होती है। मिट्टी की उर्वरकता में उसके भौतिक एवं रासायनिक गुणों का योगदान होता है। जबकि उसके निर्माण में जलवायु एवं मनुष्य द्वारा की जाने वाली जुताई, निराई–गुडाई एवं साफ–सफाई आदि का योगदान होता है। किसी भी मृदा की उर्वरता का निर्धारण उसके भौतिक एवं रासायनिक गुणों पर निर्भर करता है। क्योंकि प्रत्येक फसल एवं वनस्पति विशेष प्रकार की मृदा में सुगमता से विकसीत होती है, जैसे–चावल के लिए चिकनी मिट्टी, गेहूं के लिए दोमट मिट्टी, कपास के लिए काली मिट्टी अधिक उपयोगी होती है। समस्त शाकाहारी जीवों का भोजन मृदा में उपजने वाली वनस्पतियों पर ही निर्भर करता है। मांसाहारी जीव भी जिन प्राणियों को अपना भोजन बनाते हैं वह प्राणी भी वनस्पतियों को ही अपना भोजन बनाते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि संपूर्ण शाकाहारी एवं मांसाहारी जीव अपना भोजन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से ही प्राप्त करते हैं। उत्तम कृषि के लिए उपजाऊ मिट्टी सर्व प्रमुख भौतिक तत्व है। सभी प्रकार के खाद्यान्न, तिलहन, तेल, कपास, रेसा आदि सूती वस्त्र उद्योग, रेशम उद्योग, आटा पीसने, धान कूटने, दाल बनाने व जूट उद्योग आदि कृषि पर आधारित उद्योग हैं, जो मृदा की उत्पादकता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं।

जलाशयों का प्रभाव

मानव एवं वनस्पतियों सहित दुनियाँ के प्रतेक जीव के लिए जल परम आवश्यक है। जल पीने के साथ, साफ–सफाई, भोजन बनाने, फसलों की सिंचाई, नहाने, पशुओं को पानी पिलाने आदि के काम लिया जाता है। जिन क्षेत्रों में सागर, झील, तालाब, कुआ, बावड़ी आदि प्रमुख जल स्रोत पाए जाते हैं, प्रायः मानव का निवास उन्हीं क्षेत्रों में देखने को मिलता है। विश्व कि अधिकांश सभ्यताएं नदियों के किनारे ही बसने के प्रमाण मिलते हैं, जैसे ह्वांग्हो, यांगटीसीक्यांग, मिकांग, इरावदी, मिसिसिपी, गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र आदि। मिश्र, सहारा मरुस्थल का अंग होते हुए भी उस के उत्तरी भाग में नील नदी से नहर निकाल कर आसपास के क्षेत्रों में सिंचाई द्वारा विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाने लगी है। इसी तरह राजस्थान के उत्तरी भाग में इंदिरा गांधी नहर के आगमन के पश्चात यहां विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाने लगी हैं। अब यह क्षेत्र राजस्थान का ''अन्न का कटोरा'' कहलाने लगा है।

आधुनिक युग में समुद्री यातायात के विकास से महासागर अवरोध के स्थान पर विभिन्न महाद्वीपों में पारस्परिक संबंध बनाने में सहायक साबित हो रहे हैं, क्योंकि जल यातायात, स्थल एवं वायु यात्रा से सस्ता यातायात है। वर्तमान समय में अधिकांशतः अंतरराष्ट्रीय व्यापार में जल यातायात की प्रमुखता है। महासागरीय बाधाओं के कारण प्रशांत महासागर के दोनों तटों पर भिन्न–भिन्न संस्कृतियों पूर्व में अमेरिकी संस्कृति एवं पश्चिम में चीन संस्कृति का विकास हुआ। विश्व की अधिकांश जनसंख्या नदियों के किनारे या समुद्र तटों के पास पाई जाती हैं, क्योंकि उन्हें वहां मछली, भोज्य पदार्थ, नमक, सीप, तेल, वनस्पति एवं औषधि सुगमता से मिल जाती है।

प्राकृतिक वनस्पति का प्रभाव

प्राचीन काल से वन प्रदेशों ने मानव के विकास में अवरोधक का कार्य किया और वर्तमान समय में भी भूमध्य रेखीय सघन वन प्रदेश विश्व के सर्वाधिक पिछड़े और अल्प जनसंख्या वाला प्रदेश है। मानव विकास और वन प्रदेशों को हम तीन भागों में बांटकर अध्ययन कर सकते हैं।

- **वनों द्वारा शासित व्यवस्था**– जहां मानव क्रियाएं बनो द्वारा नियंत्रित हैं जैसे–कांगो बेसिन, अमेजन बेसिन आदि।
- **वनो पर हावी व्यवस्था**–जहां वनों को साफ करके भूमि का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है। एशिया व मध्य अमेरिका के अधिकांश मैदानी भाग इसमें सम्मिलित है। किंतु पर्वतीय एवं दुर्गम क्षेत्रों में वन सुरक्षित है।
- **वनों पर शासित व्यवस्था–** जहां वन मानव द्वारा नियंत्रित है, इसके अंतर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका व उत्तरी पश्चिमी यूरोप के विकसित देश सम्मिलित हैं।

मानव व्यवसाय पर प्राकृतिक वनस्पति का प्रभाव

- मानसूनी प्रदेशों के आर्द्र भागों में चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष जैसे–आम, नीम, पीपल, बरगद, साल, सागौन, शीसम, जामुन आदि के वृक्ष पाए जाते हैं। जिनसे उपयोगी लकड़ी एवं फल प्राप्त होते हैं। मैदानी भागों में इन्हें साफ करके व्यवसाय के रूप में खेती की जाने लगी है।
- शुष्क एवं अर्ध शुष्क प्रदेशों में मरुदभिद छोटी पत्ती वाले वृक्ष एवं कटीली झाड़ियां पाई जाती हैं। इन प्रदेशों में पशुचारण ही मुख्य व्यवसाय है।
- उष्ण या सवाना घास प्रदेशों में कठोर एवं लंबी घासे उगती है, जो पशुओं के चारे के लिए उत्तम होती है। जबकि शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदानों में गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि दूध, मांस, ऊन एवं चमड़े के लिए पाले जाते हैं। वर्तमान समय में शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदानों के बड़े भाग को काटकर आधुनिक कृषि यंत्रों से गेहूं, जौ, कपास आदि की व्यवसायिक कृषि की जाने लगी है।

- भूमध्य रेखीय वर्षा वनों की लकड़ी कठोर एवं मजबूत होती है जिनका उपयोग रेल के स्लीपर, डिब्बे, लकड़ी के लट्ठे, भवन निर्माण आदि के लिए किया जाता है। इनका उपयोग औद्योगिक कार्यों में कम किया जाता है। वहीं शीतोष्ण कटिबंधिय वनों की लकड़ियां कोमल होने के कारण कागज, लुग्दी, दियासलाई के लिए औद्योगिक कच्चे माल के रूप में काम में ली जाती है।
- शीत प्रधान टुण्ड्रा प्रदेशों में बर्फ के पिघलने पर शैवाल, लाइकेन, जैसी अत्यंत छोटी वनस्पति एवं रंग–बिरंगे, फूल, दिखाई देने लगते हैं। यहां एस्किमो, चुक्ची, लैप आदि जनजातियां मछली एवं अन्य जीवों का शिकार कर अपना जीवन यापन करती हैं।

निष्कर्ष

विश्व के विभिन्न भागों में जलवायु और वनस्पतियों में भिन्नता होने के कारण अलग–अलग प्रदेशों में अनेक प्रकार के जीव जंतु एवं उपयोगी जानवर पाए जाते हैं। इस विभिन्नता का प्रभाव मानव समुदाय के आहार, बिहार, वस्त्र, निवास, आर्थिक क्रिया, आवागमन के साधन तथा सभ्यता के विकास आदि पर देखा जा सकता है। मानव ने उपयोगी पशुओं के संरक्षण हेतु उन्हें पूजा में स्थान दिया जबकि कुछ को अशुद्ध एवं कुछ जंगली पशुओं को आखेट द्वारा जीवन निर्वाह और आहार के रूप में काम लिया। सवाना तुल्य प्रदेशों एवं मानसूनी प्रदेशों में दूध के लिए गाय, भैंस, बकरी आदि का पालन किया जाता है। भार ढ़ोने के लिए खच्चर, गधे, जबकि मांसाहार के लिए सूअर और अंडों के लिए मुर्गी पालन किया जाता है। मरुस्थली प्रदेशों में पशुपालन ही प्रमुख व्यवसाय है। साथ ही सवारी आदि के लिए ऊंट एवं घोड़ों को पालते हैं। टुण्ड्रा प्रदेशों में आदिम जनजातियां मांसाहार हेतु रेन्डियर, ध्रुवीय भालू, खरगोश, समुद्री जीवों, को अपने आहार के रूप में काम लेते हैं। जलीय जीवों में ह्वेल, सील, वालरस आदि मछलियों से मांस, चमड़ा एवं तेल प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार मानवीय जीवन के विकास में वहां के पर्यावरण, भौतिक संसाधन एवं माननीय छाट का प्रमुख योगदान रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चौहान, टी. सी. (2004) : इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट इन इंडियन डेजर्ट, दिव्या पब्लिकेशन, जोधपुर।
2. शुक्ला, एस.के. (2007) : प्रादेशिक भूगोल के सिद्धांत, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
3. अतरचन्द, (2009) : एनवायरमेंट चैलेंज, यू.डी.एच. पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. नेगी, पी.एस. (2011) : पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
5. पवार, एम.एस. (2012) :एनवायरमेंटल चेंज एण्ड सस्टेंड डेवलपमेंट इन द न्यू मिलेनियम, वॉल्यूम–03, बुक इन एनवायरमेंटल इन नेट।
6. शर्मा, एच.एस., मिश्रा, आर.एन. (2013): भौतिक भूगोल, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण।
7. राव, बी.पी. (2015) : भारत एक भौगोलिक समीक्षा, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।

❖◆❖